E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

"कन्या भ्रूण हत्या" समाजशास्त्रीय अध्ययन

मंजू गुर्जर

शोधार्थिनी, विषय समाजशास्त्र

जीवाजी विश्वविद्यालय

ग्वालियर (म.प्र.)

डॉ. ममता दुबे

प्राध्यापक- वीरांगना झलकारी बाई

शासकीय उत्कृष्ट महाविद्यालय

ग्वालियर (म.प्र.)

Paper Rcevied date

05/03/2025

Paper date Publishing Date

10/03/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.15121830

IMPACT FACTOR 5.924

प्रस्तावना

भारतीय समाज में कन्या भ्रूण हत्या को एक अभिशाप माना जाता है। इसके पीछे कई सामाजिक कुरितियाँ एवं भ्रान्तियां जिम्मेदार है हमारा भारतीय समाज एक पुरूष प्रधान समाज है और यहाँ किसी लड़की को पालना पोषना उसकी अस्मिता की रक्षा करना कुछ मुश्किल भरा होता है। यही नहीं हमारे समाज में दहेज की परम्परा ने इतना विकराल रूप ले लिया है। कि लोग कन्या जन्म होने पर ही घबरा जाते हैं वर्तमान समय में कन्या भ्रूण हत्या एक ज्वलंत सामाजिक अपराध एवं समस्या के रूप में प्रत्येक समाज के सम्मुख एक चुनौती के रूप में खड़ी हुई है। जैसा कि हम जानते है कि समाज के दो विभिन्न अंग नर और नारी हैं इन दोनों के बगैर समाज अपूर्ण है क्योंकि स्त्री एवं पुरूष एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। जीवन एवं समाज की कल्पना इन दोनों के बिना अधूरी है। कहा जाता है कि सृष्टि के रचियता दो है। प्रथम ब्रम्हा जी तथा द्वितीय जन्म देने वाली माँ कहावत है कि "जननी जन्म भूमिश्वर स्वगदिय गरीयसी" अर्थात जन्म देने वाली माँ और जन्म भूमि का स्थान स्वर्ग से भी बढ़कर होता है तो फिर कैसे कन्या को लक्ष्मी एवं जननी की उपमा देने वाली भारतीय संस्कृति इतनी क्रूर एवं अमानवीय हो गई कि उसके अस्तित्व पर काले घने बादल मंडराने लगे है । यद्यपि किसी भी देश की आधी जनसंख्या स्त्रियाँ हैं । तो फिर क्यों हमारे यहाँ स्त्री - पुरूष के अनुपात में इतनी तेजी से गिरावट आ रहा है। अर्थात प्रति हजार पुरूषों पर स्त्रियों की संख्या तेजी से क्यों घट रही है। इसका एक बहुत बड़ा कारण कन्या भ्रूण हत्या है। अर्थात् माँ की कोख में को नष्ट करने के पाप को कन्या भ्रूण हत्या कहा जाता है ।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

स्त्री भ्रूण

तालिका क्रमांक- 1

विभिन्न राज्यों में शिशु लिंगानुपात 900 से कम (2001-2011)

स.क्र.	राजय	शिशु लिंगानुपात (0–6) वर्ष	
		2001	2011
1	जम्मू कश्मीर	941	862
2	हिमाचल प्रदेश	896	909
3	पंजाब	798	846
4	चण्डीगढ़	845	880
5	उत्तराखण्ड	908	890
6	हरियाणा	819	834
7	दिल्ली	868	871
8	राजस्थान	909	888
9	गुजरात	883	809
10	महाराष्ट्र	913	894
11	मध्यप्रदेश	932	918

कन्या भ्रूण हत्या के कारण :-

1. **भारतीय समाज में पितृसत्तात्मक सोच कन्या भ्रूण हत्या के लिए प्रमुख रूप से उत्तरदायी है। समाज में आज भी बेटे को बुढ़ापे का सहारा माना जाता है और बेटी को पराया धन धार्मिक और सामाजिक कार्यकलापो के अनुसार बेटे को ही माता-पिता के अंतिम संस्कार व पिण्डदान का अधिकारी माना जाता है ।**

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

2. **भारतीय समाज में कन्या भ्रूण हत्या का प्रमुख कारण दहेज भी है ।**
3. **चिकित्सको का नैतिक पतन आदि भी कन्या भ्रूण हत्या को बढ़ावा देते है ।**
4. **4. सोनोग्राफी द्वारा भ्रूण हत्या की जाँच की आसान उपलब्धता सरल व सुलभ पहुंच एवं गर्भपात की आसान प्रक्रिया कन्या भ्रूण हत्या को बढ़ावा देती है।**
5. **यह सामाजिक मान्यता की पुत्र जन्म महिला के सामाजिक स्तर में उत्थान का कारक होता है।**

तालिका क्रमांक - 2

गुर्जर समाज में कन्या भ्रूण हत्या के लिए कौन सा कारण उत्तरदायी है?

स.क्र.	गुर्जर समाज में कन्या भ्रूण हत्या के लिए कौन उत्तरदायी है।	संख्या	प्रतिशत
a	कम आय	19	0.38
b	छोटे परिवार की धारणा	26	5.2
c	पुत्र मोह	110	22.00
d	पुत्रियाँ पराया धन हैं	28	5.6
e	असुरक्षा की भावना	106	21.2
f	दहेज	176	35.2
g	पता नहीं	35	7.00
	योग	500	100

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 500 **महिला उत्तरादाताओं में से** 3.8 **प्रतिशत महिलाओ ने कहा कि गुर्जर समाज में कन्या भ्रूण हत्या के लिए कम आय उत्तरादायी है,** 5.2 **प्रतिशत ने कहा कि छोटे परिवार की धारणा उत्तरदायी है,** 22.00 **प्रतिशत ने कहा कि पुत्र मोह उत्तरदायी है,** 5.6 **प्रतिशत ने कहा कि कन्या भ्रूण हत्या के लिए पुत्रियाँ पराया धन होती है का विचार उत्तरादायी है,** 21.2

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

प्रतिशत महिलाओं ने कहा कि असुरक्षा की भावना उत्तरदायी है, 35.2 **प्रतिशत ने कहा कि कन्या भ्रूण हत्या के लिए दहेज उत्तरदायी है,** 7.00 **प्रतिशत ने कहा कि कन्या भ्रूण हत्या के लिए क्या उत्तरदायी है पता नहीं।**

तालिका क्रमांक–3

गुर्जर समाज में कन्या भ्रूण हत्या के लिए कौन अधिक जिम्मेदार है?

स.क्र.	गुर्जर समाज में कन्या भ्रूण हत्या के लिए कौन अधिक जिम्मेदार है।	संख्या	प्रतिशत
a	महिलाये	28	5.6
b	पुरूष	120	24.00
c	दोनों समान रूप से	273	54.6
d	पता नहीं	79	15.8
	योग	500	100

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 500 **महिला उत्तरदाताओं में से** 5.6 **प्रतिशत महिलाओं ने कहा कि गुर्जर समाज में कन्या भ्रूण हत्या के लिए महिलाऐ अधिक जिम्मेदार है,** 24.00 **प्रतिशत महिला ने कहा कि पुरुष अधिक जिम्मेदार है,** 54.6 **प्रतिशत ने कहा कि महिला व पुरूष दोनों समान रूप से जिम्मेदार है,** 15.8 **प्रतिशत ने कहा कि पता नहीं कौन जिम्मेदार है ।**

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

तालिका क्रमांक–4

गुर्जर समाज में कन्या भ्रूण हत्या किस स्थिति में अधिक होती है?

स.क्र.	गुर्जर समाज में कन्या भ्रूण हत्या किस स्थिति में अधिक होती है।	संख्या	प्रतिशत
a	प्रथम संतान पुत्री हो जाने के बाद	211	42.2
b	प्रथम संतान पुत्र हो जाने के बाद	122	24.4
c	पता नहीं	167	33.4
	योग	500	100

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 500 महिला उत्तरदाताओं में से 42.2 प्रतिशत महिलाओं ने कहा कि प्रथम संतान पुत्री हो जाने के बाद कन्या भ्रूण हत्या अधिक होती है, 24.4 प्रतिशत ने कहा प्रथम संतान पुत्र हो जाने के बाद कन्या भ्रूण हत्या अधिक होती है जबकि 33.4 प्रतिशत ने कहा कि पता नहीं ।

कन्या भ्रूण हत्या को रोकने के उपाय ओर सरकार की पहलः-

सरकार ने देश में कन्या भ्रूण हत्या रोकने के लिए बहु आयामी रणनिति अपनाई है। इसमें जागरूकता पैदा करने और सुग्योजित उपाय पैदा करने के साथ-साथ महिलाओं को सामाकि आर्थिक रूप से अधिकार सम्पन्न बनाने के कार्यक्रम शामिल हैं जिनमें मुख्य उपाय निम्न है-

1. गर्भधारण करने से पहले और बाद में लिंग चयन रोकने और प्रसव पूर्व निदान तकनिकि को नियमित करने के लिए सरकार ने एक कानून गर्भधारण से पूर्व और प्रसव पूर्व निदान तकनिकी कानून 1994 में लागू किया। इसमें 2003 में संशोधन किया गया ।

2. सरकार इस कानून को प्रभावकारी तरीके से लागू करने में तेजी लाई उसमें विभिन्न नियमों में संशोधन किए जिसमें गैर पंजीकृत मशीनों को सील करने में और उन्हें जप्त करने तथा गैर पंजीकृत क्लीनिको को दंडित करने के नियम एवं प्रावधान शामिल है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

3. स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री ने सभी राज्य सरकारों से आग्रह किया कि वे अधिनियम को मजबूती से कार्यान्वित करें और गैर कानूनी तरीके सेलिंग का पता लगाने के तरीके रोकने के लिए कदम उठाएँ ।

4. 5माननीय प्रधानमंत्री जी ने सभी राज्यों के मुख्यमंत्रियों को आग्रह किया कि वे लिंग अनुपात की प्रवृति को पलट दे तथा शिक्षा और अधिकारिता पर जोर देकर बालिकाओं की अनदेखी की प्रवृति पर रोक लगाएँ ।

5. वेबसाइट पर लिंग चयन विज्ञापन रोकने के लिए यह मामला संचार एवं सूचना प्रोद्योगिकी मंत्रालय के समक्ष उठाया गया।

6. पी.एन.डी.टी कानून के अन्तर्गत केन्द्रीय निगरानी बोर्ड का गठन किया गया और इसकी नियमित बैठके कराई जा रही है।

कन्या भ्रूण हत्या के प्रभाव :-

1. कम लिंगानुपात जनगणना 2011 के अनुसार 1000 लड़को पर 914 लड़कियाँ ।
2. महिला / महिला तस्करी गरीब युवतियाँ इस अवैध प्रथा का शिकार होती है ।
3. बलात्कार और मारपीट के मामलों में वृद्धि |
4. जनसंख्या में गिरावट / कम माताओं और कम गर्भ के कारण यहाँ कम जन्म होते है।

निष्कर्ष:-

स्पष्ट होता है कि विश्व भारत का सबसे कम लिंगानुपात अर्थात् प्रति हजार पुरूषों पर स्त्रियों की संख्या सन् 2001 में 933 एवं सन 2011 में 940 है। भारत में गिरते लिंगानुपात का प्रमुख कारण कन्या भ्रूण हत्या है इस लिंगानुपात का प्रमुख कारण कन्या भ्रूण हत्या है। कन्या भ्रूण हत्या को रोकने के लिए सर्वप्रथम प्राचीन काल से समाज में व्याप्त रूढ़िवादी विचारधारा तथा पुत्र व पुत्री के बीच भेदभाव पूर्णव्यवहार की मानसिकता में परिवर्तन लाना होगा । "बेटी को अधिकार दो बेटे जैसा प्यार दो' जैसे विचारों को अपने व्यवहार में लाना होगा सरकार के द्वारा कन्या भ्रूण हत्या रोकने के लिए कठोर से कठौर कानून बनाये जाने चाहिए और कानूनों का पालन न करने वालों के खिलाफ सख्त कार्यवाही व कठोर दण्ड की व्यवस्था की जानी चाहिए। एन.सी. ओ. सामाजिक कार्यकर्ताओं बुद्धिजीवियों के द्वारा कन्या भ्रूण हत्या को रोकने तथा जनता को जागरूक करने के लिए विशेष प्रयास किये जाने चाहिए । अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि कन्या भ्रूण हत्या के लिए दहेज अधिक उत्तरादायी है । क्योंकि हमारे समाज में दहेज का लेन-देन लाखों करोड़ो में होता है ।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

संदर्भ:-

1. **आधुनिक समाज में कन्या भ्रूण हत्या : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन, डॉ० हरिचरण मीणा पृष्ठ संख्या** 1

2. **कन्या भ्रूण हत्या एक अभिषाप कु० नीरज आर्या, प्रो. राजेश्वरी पंत पृष्ठ संख्या-**87

3. **सिंह महेन्द्र प्रसाद, लोक प्रशासन इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, नई दिल्ली**, 2015 **पृष्ठ संख्या -** 465

4. **महावीर, डॉ. सुनील पृष्ठ संख्या-**172

5. **भारत में कन्या भ्रूण हत्या एक सामाजिक अभिशाप - डॉ. वसुधरा गोयल प्राचार्य शासकीय महाविद्यालय जौरा जिला मुरैना (म. प्र.) पृष्ठ संख्या -** 14-15

6. **राष्ट्रीय कैडेट कोर - महेन्द्र नाथ श्रीवास्तव पब्लिकेशन -** SBPD Publication, **पृष्ठ संख्या-**115